महाभारत का वर्ण्य विषय / विषय-वस्तु

सम्प्रति उपलब्ध महाभारत में एक लाख श्लोक विद्यमान हैं। इसी कारण इसे 'शतसाहस्री संहिता' भी कहते हैं। महाभारत का वर्तमान स्वरूप तीन विकास-क्रमों का परिणाम है। आरम्भ में व्यास ने जो ग्रन्थ लिखा उसका नाम जय था। जय के विकसित रूप का नाम भारत पड़ा तथा इसके तीसरे विकसित स्वरूप का नाम महाभारत पड़ा।

वर्तमान महाभारत अठारह पर्वों में विभक्त है जिनमें अनेक उपपर्व मुख्य घटनाओं के झाँकी के रूप में हैं। इन पर्वों की मुख्य विषय वस्तु इस प्रकार है—

(1) आदिपर्व - इस पर्व में 19 उपपर्व तथा 233 अध्याय हैं। प्रथम दो उपपर्व अनुक्रमणिका तथा पर्वसंग्रह के रूप में एक-एक अध्याय वाले हैं। तीसरा पौष्य उपपर्व गद्यात्मक है, जिसमें जनमेजय के सर्पयज्ञ की पृष्ठभूमि प्रस्तुत है। अगले दो उपपर्वों (पौलोम तथा आस्तीक) में महाभारत की भूमिका है। 'अंशावतरण' उपपर्व से वास्तविक कथा का आरम्भ हुआ है। शकुन्तला का आख्यान एवं पुरुवंश के राजाओं का वर्णन इसमें है। धृतराष्ट्र और पाण्डु इन दो भाइयों का अपने चाचा भीष्म द्वारा पालन, धृतराष्ट्र का अपनी पत्नी गान्धारी से 100 पुत्रों की प्राप्ति तथा पाण्डु की पत्नियों (कुन्ती एवं माद्री) से नियोग द्वारा पाँच पुत्रों का जन्म - ये घटनाएँ वर्णित हैं। कौरवों तथा पाण्डवों की शिक्षा-दीक्षा तथा विवाहादि का वर्णन भी इसी पर्व में है। इस विशाल पर्व में प्रायः नौ सहस्र श्लोक हैं।

(2) सभा-पर्व - 81 अध्यायों के इस पर्व का विभाजन दस उपपर्वों में हुआ है। मुख्य रूप से पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा, जरासन्ध-वध, युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान, शिशुपाल-वध एवं जुए में अपने राज्य को युधिष्ठिर द्वारा हार जाने की कथा है। हारने के फलस्वरूप पाण्डवों को बारह वर्षों तक वन में और एक वर्ष के अज्ञातवास में रहना पड़ता है।

(3) वनपर्व - 315 अध्यायों के इस दीर्घकाय पर्व में 22 उपपर्व हैं। पाण्डवों के वनवास की घटना से सम्बद्ध यह पर्व आख्यानों से परिपूर्ण है। वनवासकाल में पाण्डव तीर्थयात्रा भी करते हैं तथा उनकी भेंट अनेक ऋषि-मुनियों से होती है। वे पाण्डवों के दुःखनाश, सान्त्वना और मनोरञ्जन के लिए विविध आख्यान सुनाते हैं। इनमें नल और राम के आख्यान प्रधान हैं। सावित्री तथा सत्यवान की कथा भी यहीं आयी है। महाभारत की मुख्य दो घटनाओं का यहाँ वर्णन है जिनका मुख्य युद्ध से साक्षात् सम्बन्ध है — जयद्रथ द्वारा द्रौपदी का हरण एवं इन्द्र द्वारा कर्ण के कवच-कुण्डल का ले लिया जाना।

(4) विराट पर्व - इस पर्व में पाँच उपपर्व तथा 72 अध्याय हैं। प्रायः 2700 श्लोक इसमें हैं। पाण्डवों के अज्ञातवास की घटनाओं का इसमें वर्णन है। पाण्डव वेश बदलकर मत्स्यराज विराट के राजप्रासाद में अज्ञात रूप से रहते हैं। यहीं द्रौपदी के प्रति आसक्त कीचक का भीम द्वारा वध होता है तथा विराट की गायों का कौरवों द्वारा हरण होने पर अर्जुन के साथ कौरवों का भीषण युद्ध होता है। कौरव पराजित होते हैं तथा पाण्डवों का परिचय विराट को मिलता है। अन्तिम उपपर्व (वैवाहिक) में विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु के साथ होता है।

(5) उद्योग-पर्व - इसमें दस उपपर्व तथा 196 अध्याय हैं। श्लोकों की संख्या प्रायः 7100 है। इसका मुख्य वृत्त शान्ति के लिए वार्तालाप एवं युद्ध की पूर्वपीठिका की प्रस्तुति है। दोनों पक्ष मित्र-संग्रह में सन्नद्ध होते हैं। कृष्ण के पास सहायता के लिए अर्जुन एवं दुर्योधन

Scanned with CamScanner

दोनों आते हैं। दुर्योधन को कृष्ण की पूरी सेना और अर्जुन को शस्त्र न धारण करने की प्रतिज्ञा वाले कृष्ण मिलते हैं। शान्ति-प्रस्ताव में पाण्डव केवल पाँच गाँव लेकर भी सन्तुष्ट होने की बात कहते हैं। किन्तु दुर्योधन को स्वीकार नहीं होता। कृष्ण का शान्ति दूत बनना भी व्यर्थ हो जाता है। कृष्ण कर्ण को जन्म-वृत्तान्त सुनाकर पाण्डवों के पक्ष में करना चाहते हैं, किन्तु सफल नहीं होते। इसमें अम्बोपाख्यान के रूप में पूर्वकथा सुनायी गई है। काशिराज की पुत्री अम्बा का हरण भीष्म ने किया था। दूसरे जन्म में वही द्रुपद के घर शिखण्डी के रूप में जन्म लेती है। वह स्त्री से पुरुष बन जाती है। इस जन्म में भी भीष्म से बदला लेने की भावना उसमें है। महाभारत युद्ध की प्रस्तावना इस पर्व में सम्यक् रूप से दी गई है।

(6) भीष्म पर्व - इसमें पाँच उपपर्व तथा प्रायः 6000 श्लोक हैं। इसका विभाजन 122 अध्यायों में हुआ है। युद्ध की भूमिका के रूप में कुछ भाग है और शेष भाग में भीष्म के सेनापतित्व में दस दिनों के भारत-युद्ध का वर्णन है। संजय धृतराष्ट्र को युद्ध का समस्त वृत्तान्त दिव्य-दृष्टि से देखकर बतलाता है। सभापर्व के समान इस पर्व के आरम्भ में भूगोल-वर्णन है। युद्ध के आरम्भ में कृष्णार्जुन-संवाद के रूप में 18 अध्यायों का एक अंश है, जिसे भगवद्गीता कहा जाता है। इसमें कृष्ण ने अर्जुन को उत्साहित करने वाले आध्यात्मिक उपदेश दिये हैं। युद्ध के तीसरे दिन भीष्म के पराक्रम से विवश होकर कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर भीष्म के वध के लिए उद्यत होते हैं। भीष्म कृष्ण की स्तुति करते हैं। अन्त में शिखण्डी को आगे करके भीष्म को रणभूमि में बाणों के प्रहार से गिराया जाता है। वे शरशय्या पर सो जाते हैं, किन्तु उनकी मृत्यु नहीं होती।

(7) द्रोण-पर्व - इस पर्व में आठ उपपर्व, 202 अध्याय तथा प्रायः दस सहस्र श्लोक हैं। यहाँ द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में कौरवों के, पाण्डवों के साथ पाँच दिनों के भीषण तथा अन्याय पूर्ण युद्ध का वर्णन है। युद्ध में क्रमशः संशप्तकों, अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच तथा द्रोणाचार्य का वध होता है। इन सभी घटनाओं पर पृथक्-पृथक् उपपर्व हैं। द्रोण के सेनापति बनने पर कर्ण भी पराक्रम दिखाता है जबकि भीष्म के समय में वह युद्ध से विरत था। अभिमन्यु के मारे जाने पर व्यास युधिष्ठिर के शोक को कम करने के लिए सोलह राजाओं का चरित सुनाते हैं। कथा के भीतर कथा का यह सुन्दर निदर्शन है। द्रोण का वध छलपूर्वक होने पर उनका पुत्र अश्वत्थामा कुपित होकर नाराचणास्त्र का प्रयोग करता है, जिससे कृष्ण पाण्डवों की रक्षा करते हैं। द्रोणपर्व के पाठ और श्रवण का फल भी अन्त में सुनाया गया है।

(8) कर्णपर्व - इस पर्व में 96 अध्याय तथा प्रायः साढ़े-पाँच सहस्र श्लोक हैं। इसका विभाजन उपपर्वों में नहीं हुआ है। कौरव-सेना का अध्यक्ष कर्ण बनता है जो दो दिनों तक युद्ध करके मारा जाता है। कर्ण के अहम् की तुष्टि के लिए मद्रनरेश शल्य को उसका सारथि बनाया जाता है। कर्ण और शल्य का परस्पर वाग्युद्ध बड़ा रोचक रूप लेता है। दोनों एक-दूसरे के राज्य की प्रजाओं की निन्दा करते हैं। उपपर्वों का अभाव यह संकेत करता है कि मूल-ग्रन्थ जय में कर्ण की उपेक्षा रही होगी और यह बहुत संक्षिप्त पर्व रहा होगा।

(9) शल्यपर्व - इसमें दो उपपर्व (ह्रद-प्रवेश तथा गदापर्व), 65 अध्याय तथा प्रायः 3700 श्लोक हैं। इसमें भारत-युद्ध के अन्तिम (अठारहवें) दिन के युद्ध का वर्णन है, जब शल्य कौरवों का सेनापति बना था। शल्य का वध, दुर्योधन का गदायुद्ध और ऊरुभङ्ग इस पर्व की

Scanned with CamScanner

मुख्य घटनाएँ हैं। इस पर्व के साथ युद्ध समाप्त हो जाता है।
सम्भवतः 'जय' नामक मूल-ग्रन्थ में उपर्युक्त चार पर्व ही रहे होंगे, जिनमें पाण्डवों की विजय दिखायी गयी है। शल्यपर्व में कुछ प्राचीन आख्यान भी हैं, जिनमें तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है।

(10) सौप्तिक पर्व- इसमें एक उपपर्व (ऐषीक), 18 अध्याय तथा 870 श्लोक हैं। मुख्य कथा पाण्डवों की सोयी हुई सेना पर आक्रमण करके द्रौपदी के पाँचों-पुत्रों के मारे जाने की है। यह कुकर्म कौरव-सेना के तीन महारथियों (कृपाचार्य, कृतवर्मा, और अश्वत्थामा) ने मिलकर किया था। इस समाचार को वे महारथी दुर्योधन को जाकर सुनाते हैं, जिससे वह सन्तोषपूर्वक प्राण त्याग देता है। पाण्डव अश्वत्थामा को पकड़कर उसके सिर की मणि निकाल लेते हैं।

(11) स्त्री पर्व- इसमें तीन उपपर्व (जलप्रदानिक, स्त्रीविलाप तथा श्राद्ध), 27 अध्याय तथा 820 श्लोक हैं। श्राद्ध उपपर्व में कुन्ती युधिष्ठिर को कर्ण के जन्म का वृत्तान्त सुनाकर उसका भी श्राद्ध करने का अनुरोध करती है। इस पर युधिष्ठिर स्त्रीजाति को शाप देते हैं कि अब से स्त्रियों के मन में रहस्य की कोई बात छिपी नहीं रहेगी। गान्धारी कृष्ण के वंश के विनाश का शाप देती है, क्योंकि उन्होंने कौरवों का विनाश करा दिया।

(12) शान्तिपर्व- यह महाभारत में बाद में जोड़ा गया पर्व प्रतीत होता है। मूल ग्रन्थों में (जय और भारत में) यह नहीं था अथवा लघुरूप में था। इसमें तीन उपपर्व हैं- राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म तथा मोक्षधर्म। इसके वर्तमान रूप में 365 अध्याय तथा 14725 श्लोक हैं। इस दृष्टि से यह महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है। महाभारत में सबसे अधिक परिवर्तन और परिवर्धन इसी पर्व में हुआ है। धार्मिक एवं दार्शनिक सामग्री सर्वाधिक इसी पर्व में है। राजधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, दण्डनीति, आपद्धर्म, आदि इसमें विस्तार से विवेचित हैं। मोक्षधर्म के अन्तर्गत सृष्टि, जीव, आत्मा, कर्मज्ञान, पुरुषार्थ आदि आध्यात्मिक विषयों को यहाँ प्रतिपादित किया गया है। इस प्रसङ्ग में पराशर-गीता, हंस-गीता इत्यादि ग्रन्थ महत्वपूर्ण हैं। यह पर्व अपने आप में एक स्वतन्त्र पुराण-जैसा ग्रन्थ है। सामाजिक व्यवस्था से लेकर मोक्ष तक का इसमें प्रतिपादन है। शरशय्या पर लेटे हुए भीष्म के द्वारा युधिष्ठिर आदि को दिये गये उपदेश के रूप में इस पर्व का विन्यास हुआ है।

(13) अनुशासन-पर्व- विषय-वस्तु की दृष्टि से यह शान्ति-पर्व से मिलता है। इसमें मुख्य रूप से धर्मशास्त्रीय उपदेश हैं, जो भीष्म द्वारा अपने समक्ष उपस्थित युधिष्ठिर आदि को दिये गये हैं। धर्मशास्त्रीय उपदेशों को आख्यानों से भरा गया है। इस पर्व में दो उपपर्व, 168 अध्याय तथा दस सहस्र से कुछ कम श्लोक हैं। इसका प्रथम उपपर्व 'दानधर्म' है, जो 166 अध्यायों का होने के कारण बड़ा भाग है। दूसरा पर्व 'भीष्म का स्वर्गारोहण' है, जिसमें केवल दो ही अध्याय हैं। यह मूल ग्रन्थ का भाग रहा होगा। आधुनिक आलोचकों का अनुमान है कि शान्तिपर्व मूलग्रन्थ का भाग नहीं था, किन्तु इसे प्राचीन काल में ही जोड़ा गया था। अनुशासन-पर्व तो इसके भी बाद जोड़ा गया था। ब्राह्मणों की महत्ता तथा उन्हें दान करने का जैसा वर्णन यहाँ है, वैसा महाभारत में अन्यत्र नहीं है। इस पर्व के 17वें अध्याय में शिवसहस्रनामस्तोत्र और 149वें अध्याय में विष्णुसहस्रनामस्तोत्र हैं, जिनका पाठ आस्थावान लोग आज भी करते हैं।

(14) आश्वमेधिकपर्व- इस पर्व से महाभारत की मुख्य कथा फिर जुड़ जाती है। व्यास के आदेश से युधिष्ठिर अश्वमेध-यज्ञ करते हैं और अर्जुन एक वर्ष तक यज्ञाश्व की रक्षा करते हैं। युधिष्ठिर

पापमुक्त हो पवित्र राजा के रूप में राज्य संभालते हैं। इसके अनुगीता नामक उपपर्व में दक्षनिशास्त्र की भी सामग्री है। इस पर्व में 92 अध्याय तथा प्रायः सवा चार सहस्र श्लोक हैं। दक्षिण भारतीय संस्करण में 21 अध्यायों का वैष्णव धर्म नामक एक अतिरिक्त उपपर्व है। इसमें वैष्णवों के क्रिया-कलापों का वर्णन है।

(15) आश्रमवासिकपर्व - इसमें तीन उपपर्व, 39 अध्याय तथा 1100 श्लोक हैं। इसका मुख्य इतिवृत्त धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वन में आश्रम बनाकर निवास करना है। धृतराष्ट्र पन्द्रह वर्षों तक युधिष्ठिर के परामर्शदाता बने रहे थे, तब उन्होंने वानप्रस्थ का जीवन अपनाया।

(16) मौसलपर्व - यह केवल आठ अध्यायों और 304 श्लोकों का लघुकाय पर्व है। युधिष्ठिर के सिंहासनारोहण के 36 वर्षों के बाद गान्धारी का शाप सत्य होता है और यादव-वंश के लोग परस्पर युद्ध करके समाप्त हो जाते हैं। कृष्ण भी एक व्याध के द्वारा भ्रमवश मारे जाते हैं। यदुवंश के विनाशक 'मुसल' के कारण ही इस पर्व का नाम पड़ा है। उस मुसल के टुकड़े के बाण से कृष्ण की मृत्यु हुई थी।

(17) महाप्रस्थानिक पर्व - यह तीन अध्यायों का महाभारत का सबसे छोटा पर्व है जिसमें केवल 115 श्लोक हैं। इसमें पाण्डवों की हिमालय-यात्रा का वर्णन है। हिमालय में क्रमशः द्रौपदी, सहदेव आदि गिरते जाते हैं और युधिष्ठिर उनके पतन का कारण बतलाते हैं। अन्त में वे पार्थिव शरीर से ही स्वर्ग पहुँचते हैं।

(18) स्वर्गारोहण-पर्व - यह केवल पाँच अध्यायों और 220 श्लोकों का छोटा सा पर्व है। इसमें युधिष्ठिर के स्वर्ग पहुँचने तथा देवदूत के साथ नरक में जाकर अपने अनुजों के क्रन्दन-रुदन सुनने का वृत्तान्त है। आश्वासन पाकर वे दिव्यलोक जाकर कृष्ण, अर्जुन आदि से मिलते हैं। अन्तिम अध्याय में महाभारत का माहात्म्य तथा इसके उपदेश प्रतिपादित हैं। इसे भारत-सावित्री (महाभारत का सार) भी कहते हैं।

इस प्रकार महाभारत अनेक ग्रन्थों, उपग्रन्थों तथा विविध उपदेशों का अक्षय कोश है। मुख्य घटना तो प्रायः एक सहस्र अध्यायों में ही समाविष्ट है, किन्तु बम्बई संस्करण के अनुसार इसमें 2109 अध्याय हैं। इसका स्वरूप संवादात्मक है, परन्तु समस्त प्रतिपाद्य प्रश्नोत्तर-शैली में प्रस्तुत है। मूलकथा और उसके वर्णन भी संवाद के रूप में हैं। युद्ध का निष्कर्ष पहले सुनाकर तब पूरे वृत्तान्त को अतीत घटनाओं की पुनरावृत्ति के रूप में रखा गया है।

—x—

Scanned with CamScanner